Gandhi's Concept of God

Dr. Dolly Tiwary, Philosophy Department
Bhagalpur, Bihar, India.

Abstract –

According to Gandhian Philosophy, the thought of God is knowledge of all knowledge. Gandhiji had great faith in God. He was a true believer. His major stress was self-purification of oneself. God as both truth and love to him.

According to him, one can only come truly under the grace of God by helping others and those in need. Therefore, Gandhiji was a great asetic, yogi and a theist.

Key-Word – Self-purification, Non- Violence, Thiestic, Truth, Service, Religious.

गॉधीजी प्रधान रूप से संत, राजनीतिज्ञ, समाजसुधारक और आचारशास्त्री थे। धर्म में उन्हें विशेष आस्था थी। गॉधी एक साधक, योगी एवं भक्त थे । इन्होंने आत्मशुद्धि पर ज्यादा बल दिया है। बिना आत्मशुद्धि के अहिंसा का अभ्यास एक स्वप्न है। जो हृदय से शुद्ध नहीं होता उसे ईश्वर का साक्षात्कार नहीं हो सकता। गॉधीजी को ईश्वर में इतनी आस्था थी कौ वे निर्बल के बल राम में विश्वास करते थे। गॉधीजी अपने आत्मकथा में लिखते हैं – मेरा प्रस्ताव आत्म – साक्षात्कार है, ईश्वर का आमने – सामने से दर्शन मोक्ष है। ईश्वर अनिवर्चनीय है, ईश्वर के अनंत रूप है। मेरे लिए ईश्वर सत्य एवं प्रेम है। ईश्वर नीतिशास्त्र एवं नैतिक है। ईश्वर अभ्यत्व है, ईश्वर जीवन एवं प्रकाश का स्त्रोत है। गॉधीजी का ईश्वर सगुण है या निर्गुण। गॉधीजी निर्गुण प्रधान है। गॉधीजी ईश्वर को सत्य मानते हैं। उनका मानना है ईश्वर का साक्षात्कार सेवा से ही संभव है। गंभीर चिंतन होने के कारण उन्होंने एक दार्शनिक दृष्टिकोण भी अपना लिया था, और उसी से प्रेरित उन्होंने विभिन्न विषयों पर बहुत कुछ लिखा है, कन्तु दर्शन पर कोई सुनियोजित ग्रंथ नहीं प्रस्तुत किया। उनकी प्रकीर्ण रचना में से उनके दार्शनिक विचार संग्रहित किये जा सकते हैं। इस संबंध में गीता–माता, सत्य के प्रयोग डल तमसपहपवद सत्य ही ईश्वर है।

ईश्वर का विचार गॉधी दर्शन का केन्द्र बिन्दु है। यह विचार गॉधीजी के संपूर्ण विचारों की आधारशिला है। ईश्वर ही परम् तत्व ऐसा है वे कहते थे। गॉधीजी एक पक्के ईश्वरवादी थे। ईश्वर में उनकी बड़ी गहरी आस्था थी। ईश्वार के प्रति उनकी गहरी आस्था इन वाक्यों से प्रकट है जिसे गॉधीजी ने स्वंय कहा था– ‘ईश्वर का अस्तित्व ठीक वैसा ही है जैसे हमारा और तुम्हारा इस कमरे में है। बिना हवा के और जल के रह सकता है,लेकिन ईश्वर के बिना एक पल भी नहीं रह सकता है चाहे मेरी ऑखें निकाल ली जाय,सर काट दिया जाय लेकिन मेरी मृत्यु नहीं हो सकती लेकिन जिस पल ईश्वर से मेरा विश्वास हट जायेंगा उसी पल

मेरी मृत्यु हो जायेगी।' गॉधीजी ने ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं किया। उनका ऐसा कहना ही आश्चर्य की बात होती। शास्त्रीय दर्शन के अस्त्रों का उपयोग करने की अनिच्छा के अतिरिक्त ईश्वर उनके लिए इतना प्रखर अनुभव था कि उसका असस्तित्व अस्थापित करने का प्रश्न ही नहीं उठता था। फिर भी ईश्वर के संबंध में कुछ प्रचलित प्रमाण उन्होंने अवश्य रखे हैं। एक महत्वपूर्ण उद्धरण है– 'ईश्वर के अस्तित्व के सीमित प्रमाण देना संभव है।' जगत में व्यवथा है और प्रत्येक पदार्थ और प्रत्येक जीवित प्राणी अंधा नही ंहै क्योंकि मनुष्यों के आचरण को किसी अन्य नियम के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है। समस्त जीवन को चलानेवाला वह विनयम ईश्वर ही है।

कभी–कभी वे अटलता के सिद्धान्त के आधार पर तर्क करते जान पड़ते हैं। जिस पर उपनिषदों में इतना बल दिया गया है। समस्त अनित्य व्यापार के पीछे कुछ न कुछ तो नित्य होना ही चाहिए। वे कहते हैं– 'मुझे लगता है कि यद्यपि मेरे चारों ओर की हर वस्तु परिवर्तनशील है, फर भी इस समस्त परिवर्तवन के तल में ऐसी कोई जीवन्त शक्ति अवश्य है जो परिवर्तनहीन है। जो रचती है, मिटाती है और फिल से रचती है। वह प्राणदायी शक्ति या आत्मा ही ईश्वर है।' मृत्यु के बीच भी जीवन अटल है असत्य के बीच भी सत्य अटल है। अंधकार के बीच भी प्रकाश अटल है। इसलिए मै समझता हू कि ईश्वर जीवन, सत्य प्रेम है। यहॉ यह जोड़ना आवश्यक है कि गॉधी बार–बार कहते हैं सत्य अमर है अथवा उन्हीं के शब्दों में मृत्युहीन हैं। किन्तु गॉधीवादी चिंतन की सामान्य प्रवृत्ति जहॉ तक ईश्वर संबंधी धारणा का प्रश्न है, बौद्धिक दृष्टिकोण्या को दूसरा स्थान देने की है। जो केवल बुद्धि को संतोष दे यदि यह संभव भी हो तो वह ईश्वर के हृदय पर राज्य करना और उसको नया रूप देना आवश्यक है। इस भॉति वास्तविक अनुभूति द्वारा ही ईश्वर को अनुभव किया जा सकता है। इस अनुभूति का स्वरूप निर्धारित नहीं है। कभी–कभी गॉधी नैतिक अनुभूति को ईश्वर के अस्तित्व की सर्वश्रेष्ठ कसौटी मानते हैं। तब ईश्वर नैतिक नियम का ही दूसरा नाम हो जाता है। कई बार वे मानवीय इन्द्रियबोध और चिंतन दोनों को ही अपर्याप्त बताते हैं। वे अलग–अलग अथवा मिलकर भी परम् सत्ता की चाह नहीं पा सकते। कोई ऐसी वचनातीत और रहस्यमयी शक्ति अवश्य ळे जो सबमें व्याप्त है। मैं उसे देखता नहीं पर उसे अनुभव करता हूॅ। यह अदृश्य शक्ति की भिन्नता का अनुभव करता है। फिर भी वह प्रमाणों द्वारा नहीं सिद्ध होती क्योंकि वह इन्द्रियों द्वारा गम्य हर वस्तु से भिन्न है, इन्द्रियातीत है।

गॉधीजी ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म और वैष्णव धर्म से बहुत अधिक प्रभावित थे। उन्होंने इन तीनों ही दर्शनों के बीच समन्वय लाने की चेष्टा की है। फिर भी गॉधीजी के उपर वैष्णव धर्म का प्रभाव सर्वोपरि है। गॉधीजी भी ईश्वर को सगुण मानते हैं। उनके अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वद्रष्टा और सर्वत्र विद्यमान सत्ता है। वह सभी शुभ गुणों का भंडार हैं वह एक रहस्यमय शक्ति है, जो संपूर्ण जगत में व्याप्त है। शंकर की तरह गॉधीजी ने जगत को मिथ्या या माया नहीं माना है। उनके अनुसार जगत सत्य है और इसलिए ईष्वर का सृष्टि रचना भी सत्य है। ईश्वर संसार का सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। वह स्वेच्छा से संसार की सृष्टि करता है। फिर उसका विनाश करता है, और फिर उसकी सृष्टि करता है। ईश्वर को यदि गॉधीजी ने व्यक्तित्ववान कहा है तो उसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर को यदि गॉधीजी ने व्यक्तित्ववान कहा है तो उसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर एक साधारण व्यक्ति की तरह है बल्कि वह एक `नचमत च्मतेवद तमंसपजल है। ईश्वर अनंत गुणी है, अतएव उसका अपना कोई गुण नहीं है, उसके अनेक नाम हैं। इसलिए उसका कोई अपना नाम नहीं है। इस अर्थ में ईश्वर सगुण है और निगुर्ण भी। ईश्वर व्यक्तित्ववपूर्ण है गॉधीजी ने माना ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण संबंध स्थापित कर सकता हैं। ईश्वर एक रहस्यमय शक्ति है जो संपूर्ण विश्व पर छाया हुआ है। यह विश्व में व्याप्त है इससे परे भी यह इस विश्व में व्याप्त भी है तथा इस विश्व के परे भी है। वह अनंत शाश्वत एवं अपरिवर्तनशील है। वह इस विश्व का स्रष्टा पालक एवं सहारकर्ता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता एवं सर्वव्यापी है। वह इस विश्व का संचालक है तथा सभी वस्तुओं का कारण भी।

वह इस विश्व का संचालक है। तथा सभी वस्तुओं का कारण है। ईश्वर की ईच्छा के बिना घास एक तिनका भी नहीं डोल सकता है। ईश्चर संचालक भी है तथा विश्व के नियमों का साम्राज्य कायम करता है। ईश्वर स्वंय नियम है और वास्तव में नियम और नियामक दोनों दो नहीं बल्कि एक ही है। ईश्वर एक जीवित एवं चेतनशक्ति है जो समस्त विश्व को संचालित करता हैं। ईश्वर विश्व का नैतिक संचालक है। वह शुभ तथा अशुभ का रचयिता है। मानव के कार्यों के अनुकूल वह या तो पुरस्कार के रूप में शुभ देता है। गॉधीजी मानते थे कि ईश्वर के भौतिक नियमों में आस्था रखना ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है। यही महान सत्य एवं प्रेम है। विभिन्न मानवों द्वारा ईश्वर विभिन्न रूप में बवदबमपअम किये जाते है।ईश्वर जिस रूप में चाहता है उस रूप में अपने आप को व्याप्त करता हैं जितने मानव हैं उन सभी के अलग–अलग शील और गुण हैं और सबों को ईश्वर का भिन्न–भिन्न प्रतिबिम्ब मन में बना रहता है क्योंकि भावनाऐं सबों की अलग–अलग हुआ करती है। गॉधीजी मानते थे कि ईश्वर को जिस रूप में मानव पाना चाहे वह पा सकता है। अगर किसी व्यक्ति को ईष्वर के स्पर्श की जरूरत हो तो वह स्पर्श कर सकता है। ईश्वर उन लोगों के लिए व्यक्तित्वपूर्ण है जिन्हें ऐसे ईश्वर की आवश्यकता महसूस होती है वह ईश्वर मात्र है। जिन्हें विश्वास है जो ज्ञान की खोज में है उनके लिए सत्य ईश्वर है, साथ अनेक प्रकाश है। जो भावुक है उनके लिए ईश्वर प्रेम एवं सुन्दर है। अतः गॉधीजी ने कहा है & ZGod truth and love,God is feariessness. God is the sourse of light and life and yet he is above and beyond all these.* ईश्वर को अनेक प्रकार के गुणों से विभूषित किया जाता है, लेकिन ईश्वर सभी गुणों से परे हैं। ईश्वर को अनेक प्रकार के गुणों से विभूषित किया जाता है, लेकिन उनका अनेक रूप है परन्तु अपना कोई रूप नहीं। ईश्वर रूपहीन है। ईश्वर को अनेक नामों से पुकारा जाता हैं। ईश्वर संज्ञाहीन है। ईश्वर को गुण रूप संज्ञा एवं किन्ही मानवीय सीमाओं में बॉधा नहीं जा सकता है। ईश्वर दयालु एवं कठोर दोनों है। वह जो चाहे कर सकता है। ईश्वर जितना दयालु है उतना ही निष्ठुर भी। वह चाहे तो हमारे होठों का प्याला छीन सकता है ताकि हम अपनी स्वतंत्र इच्छा से सत्कार्य कर सकें।

गॉधीजी ने व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर में विश्वास किया। ईश्वर ने इस विश्व में सामजस्य स्थापित किया है तथा विश्व एक लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। वह ईश्वर जो सिर्फ बुद्धि को ही संतुष्ट करे वह ईश्वर नहीं बल्कि ईश्वरत्व तभी सिद्ध होता है जब वह मानव के हृदय एवं बुद्धि की दया एवं कृपा में विश्वास किया। लेकिन गॉधीजी ने ऐसा कभी नहीं माना की ईश्वर कर्म के नियम ;सूं वि ांतउंद्ध का खंडन करता है। ईश्वर न तो जाना जा सकता है और न उनकी व्याख्या हो सकती है, बल्कि हम ईश्वर के अस्तित्व की मात्र अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर इन्द्रिय शक्ति के परे हैं। मन, बुद्धि आदि ईश्वर को नहीं जान सकते वह मानव की अनुभूति में तो आ सकता है लेकिन मानव उसकी व्याख्या कर सकने में असमर्थ है। बौद्धिक तर्क से ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कया जा सकता है। ईश्वर विश्वास की वस्तु है और यह विश्वास अबौद्धिक नही।

गॉधीजी के ईश्वर संबंधी विचाार पर कुछ आपत्तियॉ उठायी जा सकती है जो निम्नलिख्ति है–पहली आपत्ति तो यह है कि अगर हम यह कहें कि ईश्वर का अस्तित्व है। पुनः दूसरी ओर यह कहें कि बौद्धिक प्रमाण ;तंजपवदंस ंतहनउमदजद्ध से ईश्वर का अस्तित्वव सिद्ध नहीं किया जा सकता तो यह कहना गलत है कि ईश्वर है। दूसरी आपत्ति यह है कि अगर ईश्वर विश्वास की वस्तु है तो इसे आध्यात्मिक भूख की संतुष्टि करनी चाहिए। लेकिन (Intellictual hunger) को शांत नहीं किया कर पाता क्योंकि ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध नहीं किया जा सकता और अनेक अनिश्वरवादियों ने ईश्वर के अस्तित्व को बड़ी खूबी के साथ अस्वीकार किया है। सत्य ही ईश्वर है। इन दोषों को देखकर गॉधीजी ने अपने ईश्वर संबंधी विचार में परिवर्तन लाया और ईश्वर सत्य है ;God is truth) के स्थान पर बदलकर सत्य ही ईश्वर है ;ज्तनजी पे ळवकद्ध को माना। गॉधीजी के शब्दों में ´वि संजम पदेजमंक वि ेंलपदह ळवक पे जतनजी ए ৷ ींअम इममद ेंलपदह

जतनजी पे ळवक पद वतकमत जव उवतम निससल कमपिदम उल तमसपहपवदण' सत्य को हम इनकार नहीं कर सकते क्योंकि ईश्वर के विचार में परिवर्तन बड़ा ही महत्वपूर्ण है क्योंकि इस परिवर्तन के अनेक दोषों एवं अस्पष्टों को समाप्त किया है। ईश्वर सत्य है और सत्य ही ईश्वर है। सत् का अर्थ होता है अस्तित्व। अतः ईश्वर अस्तित्व में है। ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना जा सकता है। । अगर हम ऐसा कहते हैं कि सत्य है ही नही तो हमारा यह कहना गलत होगा क्योंकि कम से कम हम इतना तो सत्य जरूर मानते हैं कि हमारे विचार सत्य हैं। सत्य ही ईश्वर है। इसे प्रमाणित किया जा सकता है – यह सत्य है कि जिस सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, सर्वव्यापक, संहारक, दृष्टिकर्ता ईश्वर की चर्चा करते हैं। उसके अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर पाते हैं लेकिन सत्य ही ईश्वर है इसे प्रमाणित किया जा सकता है क्योंकि अगर कोई सत्य में अविश्वास करता है तो उसका stalement contradictory हो जाएगा। कम से कम वह अपने `जंसमउमदज में तो विश्वास करता है। सत्य के रूप में ईश्वर की कल्पना हमारे बौद्धिक पक्ष को भी संतुष्ट करता है। धर्म के लिए ईश्वर आवश्यक है लेकिन बुद्धि एवं विचार के लिए सत्य आवश्यक है। बुद्धि के बिना सत्यता की परिकल्पना कार्य कर ही नहीं सकता। पुनः सत्य ईश्वर है यह विचार अनेक अस्पष्टताओं को दूर करता है। सत्य का एक ही अर्थ है प्रेम की तरह इसके भिन्न–भिन्न अर्थ नहीं। सत्य तो सबों के लिए समान है। सत्य तो सबों के लिए समान है। सत्य के संबंध में दो मत नहीं हो सकते। सत्य तो पउचमतेवदंस है। गॉधीजी का यह विचार बुद्ध, शंकराचार्य एवं रामानुज से मिलता–जुलता है। यही सब भारतीय प्रत्ययवाद ;प्दकपंद ज्कमंसपेउद्ध का केन्द्र बिन्दु है। बुद्ध के लिए निर्माण ही सत्य है। शंकर ब्रहम की सत्यता मानते हैं जो ब्रहम अनेकता एवं एकता कमा संबंध स्थापित करता है। रामानुज भी मानते हैं कि ईश्वर इस विश्व का आवश्क तत्व है। अतः गॉधीजी का यह विचार कि ZTruth is God' उन्हें एकवादी तथा अद्वैतवादी ;|इेवपनसपेजद्ध बना देता है। यहॉ महात्मा गॉधीजी वंदान्तियों तत्वमीमांसा के उच्च और निम्न दृष्टिबिन्दुओं के बीच नहीं कर रहे हैं बल्कि उनका उद्धेश्य सत्य के सवाल पर हिष्णुतापूर्ण पवृत्ति के लिए पृष्ठभूमि तैयार करना है।

जॉन वोनडुरेन्ट कहते हैं कि गॉधीजी कभी चरमसत्य को जानने का दावा नहीं करते थें और वे बार–बार दूसरों को याद दिलाते रहते थे कि सत्य को जानने में मनुष्य की असमर्थता के कारण यह जरूरी है कि वह अपने से भिन्न मत रखनेवालों के प्रति निरंतर खुला रवैया अपनाये। सुकरातीय विनय में गॉधीजी कहे हैं – 'सत्य को पूर्णतः प्राप्त कर लेना अपने आप की और अपनी नियति की उपलब्धि का लेना है, अर्थात् सर्वसंपूर्ण हो जाना है। मैं तो अपनी अपूर्णताओं को जानता हूँ और इसी में मेरी सारी शक्ति निहित है।' फिर भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। कि अपने विकास की एक आस्था में पहुॅचकर गॉधीजी निश्चित रूप से विधाता अथवा वैयक्तिक ईश्वर के रूप की बजाय सत्य के रूप में सत्ता की व्याख्या को अधिक प्रश्रय देने लगे थे। वे ईश्वर और सत्य को एक दूसरे का पर्याय मानते थे कि ईश्वर ही सत्य है, वहॉ बाद में वे सचेत रूप से सूत्र को बदलकर कहने लगे थे कि सत्य ही ईश्वर है। इस सूत्र के प्रथम रूप पर विचार करने पर पता चलता है कि गॉधीजी उसे इस प्रकार समझाये हैं कि – 'ईश्वर ही सत्य है।'

Reference:

1. **प्रो0 हरेन्द्र प्रा0 सिन्हा, भारतीय दर्षन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।**
2. **सर्वपल्ली राधाकृश्णन, भारतीय दर्षनषास्त्र ।**
3. l|jUn nklx|lrk] History of Indian Philosophy Motilal Banarsidas, Delhi,
4. **राधाकृश्णन, महात्मा गॉधी ।**
5. **षर्मा चन्द्रधर,** A critical Survey of Indian Philosophy Motilal Banarsidas.
6. **लक्ष्मी सक्सेना, समकालीन भारतीय दर्षन ।**